E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

हिन्दी भाषा राष्ट्र भाषा के रूप में

विवेक आत्रेय

एम.ए. (हिन्दी),

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

Paper Rcevied date

05/05/2025

Paper date Publishing Date

10/05/2025

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.15595673

IMPACT FACTOR 5.924

प्रस्तावना

विश्व में अनेक प्रकार की आषा के दवारा वाचन कार्य किया जाता है। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी आधिकारि भाषा है। राष्ट्रभाषा समस्त राष्ट्र या पूरे देश का प्रतिनिधित्व करती है।

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से प्राणी अपने आवों को दूसरों पर अभिव्यक्त करता है। भाषा ऐसी दैवी शक्ति है, जो मानव को मानवता प्रदान करती है। जिसे ताणी का वरदान प्राप्त होता है, वह ऊँचे से ऊँचे पद पर विराजमान हो सकता है तथा अक्षय कीर्ति का अधिकारी भी बन सकता है और दूसरी तरफ अवांछनीय वाणी मनुष्य के उत्थान के स्थान पर पतन की ओर अग्रसर करती है। जिस भाषा में शासक या शासन का कार्य किया जाता है उसे राजभाषा का दर्जा दिया है। जब भारतीय संविधान सभा में संघ सरकार की राजआषा निश्चित करने का सवाल खड़ा हुआ तो विशद विचार मंथन के बाद 14 सितम्बर 1949 को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा अगीकृत किया गया। संतिधान के अनुच्छेद 343 के तहत संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी है। केन्द्रीय स्तर पर भारत में अंग्रेजी को दूसरी सह राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में अंगीकृत कृपापूर्वक नहीं किया गया अपितु यह उसका अधिकार था। पं. जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में-"अंग्रेजी निश्चय ही थोपी गई आबा है. इसने हमारे लिए जान विज्ञान की खिड़किया जरूर खोली और हमें बहुत कुछ जान दिया भी पर इस पर एक ऐसी भाषा होने का लांछन भी है जो हमारी अपनी भाषाओं और हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं के ऊपर जम कर बैठ गई है। "

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

राजभाषा के रूप में हिन्दी:-

हिन्दी को भारत की राज भाषा के रूप में 14 **सितम्बर** 1949 **को स्वीकृत किया गया। संविधान में अनु०** 343 **से अनु0** 351 **तक राजभाषा के बारे जानकारी उपलब्ध करवाई गई है। प्रतिवर्ष हिन्दी के सम्मान में सभी राष्ट्रवासियों द्वारा हिन्दी दिवस मनाया जाता है। संविधान के अनु)** 343 **के अनुसार संघ की राजभाषा हिन्दी व लिपि के रूप में देवनागरी को प्रतिष्ठित किया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी दवार बताए गए निम्नलिखित लक्षणों पर दृष्टि डाल लेना आवश्यक है जो उन्होंने एक राजभाषा के लिए बताए थे**

1) **राजभाषा के रूप में हिंदी, अमलदारों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।**

2) **उस भाषा के द्वारा भारत वर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकन्ना चाहिए।**

3) **यह जरूरी है कि भारत वर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हो।**

4) **राष्ट्र के लिए यह भाषा आसान होनी चाहिए।**

5) **उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए |**

इन लक्षणों पर हिन्दी भाषा पूर्णतया खरी उतरती है।

सविधान के अनुच्छेद 344 **में राजभाषा से सम्बन्धित आयोग और संसदीय समिति के बारे में प्रावधान दिया गया है। संविधान के अनु0** 344 (1) **के तहत राष्ट्रपति** 7 **जून** 1955 **ईसवी को राजभाषा आयोग का गठन किया गया। इस आयोग की सिफारिश की जांच के लिए अनु0** 344 (4) **के अनुसार एक समिति का गठन किया गया। राजभाषा आयोग के लिए गठित समिति का कर्तव्य होगा कि वह राजभाषा आयोग दद्वारा दी गई संस्तृतियों की जांच करे ।**

हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य:-

यदि थोड़ी देर के लिए विश्व में हिंदी के भावी स्थान की बात छोड़कर उसकी वर्तमान स्थिति-गति और महत्ता पर ही नजर दौड़ाएँ तो हमारे सामने जो वैश्विक स्तर के आंकड़े आते हैं, वे बेहद उत्साह वर्धक आते हैं। उदाहरणार्थ विश्व के 160 **देशों में हिंदी देशी-विदेशी लोगों के बीच भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति अपनत्व- भाव को जगा रही है। हमारे लिए यह गौरव की बात है कि भारत ही एक ऐसा एकमात्र देश है जिसकी पाँच भाषाएँ विश्व की** 16 **प्रमुख भाषाओं (अरबी, अँग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, चीनी, स्पेनिश, हिंदी, इतावली, पुर्तगाली) में सम्मि होते हुए भी भारत सरकार की उपेक्षा के कारण वह अभी तक संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिकारिक छह भा जिसमें चीनी, स्पेनिश, अँग्रेजी, अरबी, रूसी व फ्रेंच शामिल हैं। उनमें अपना नाम जुड़वाने का गौरव प्राप्त नहीं सकी है। यह शोध का विषय है कि अस्सी**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

करोड़ (43%) से अधिक आमजनों द्वारा व्यवहृत हमारी हिंदी सयुंक्त राष्ट्र संघ में स्थापित नहीं हो पायी है। इसके विपरीत क्रमशः बीस व इक्कीस करोड़ लोगों द्वारा बोली वाली रूसी व अरबी भाषाओं का वहाँ स्थापित होना निश्चित रूप से लज्जा का विषय है।

14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने संविधान के भाग-17 के अध्याय 1 की धारा 343 (1) के अन यह घोषणा की कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। उस समय विश्व में भाषाओं के प्रयोक की संख्या के आधार पर हिंदी पाँचवे स्थान पर थी। चीनी, स्पेनिश, अँग्रेजी एवं रूसी भाषाएँ हिंदी से आगे 1980 तक आते 2 हिंदी के प्रयोक्ताओं की संख्या में तीव्रतर वृद्धि दर्ज की गई और हिंदी, चीनी और अंग्रेजी पश्चात् तीसरे स्थान पर आ गई। कहा जाता है कि हिन्दी विश्व के लगभग सभी महाद्वीपों तथा महत्त्वपूर्ण र जिनकी संख्या लगभग एक सौ चालीस हैं उनमें किसी न किसी रूप में प्रयोग होती है। वह विश्व पटल पर चित्र के समान अंकित हो रही है। आँकड़ों की अगर बात करें तो यहाँ तक बताया जाता है कि बोलने वालों संख्या के आधार पर चीनी के बाद विश्व की सबसे बड़ी भाषा हिंदी ही है। डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय के अनु "इस बात को सर्वप्रथम सन् 1999 में 'मशीन ट्रांसलेशन समिट अर्थात् यांत्रिक अनुवाद नामक संगोष्ठी में टोि विश्वविद्यालय के प्रो० होजुमि तनाका ने भाषाई आँकड़े पेश करके सिद्ध किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत आँकड़ अनुसार विश्वभर में चीनी भाषा बोलने वालों का स्थान प्रथम है और हिंदी का द्वितीय है। अँग्रेजी तो तीसरे पर पहुँच गई है। इसी क्रम में कुछ ऐसे अनुसंधित्सु विद्वान भी सक्रिय हैं जो हिंदी को चीनी के ऊपर अ प्रथम क्रमांक पर दिखाने के लिए प्रयत्नशील है।" भाषा शोध अध्ययन ने 2004 में लिखा था कि विश्व में जानने वालों की संख्या एक अरब दो करोड़ पच्चीस लाख दस हजार तीन सौ बावन है जबकि चीनी बोलने की संख्या केवल नब्बे करोड चार लाख छह हजार छह सौ चौदह है।

विश्व के मानचित्र पर अगर हिन्दी के नवल चित्र को तलाशा जाए तो पाते हैं कि सौ से भी अधिक में भारतीय प्रवासी ब्रेन ड्रेन का शिकार होकर वहीं निवास करते हैं। जहाँ भी ये भारतीय हिन्दी बोलने वाले प्र हैं वहाँ हिंदी भाषा किसी न किसी रूप में जानी या प्रयोग में लाई जाती है। विश्व क्षितिज पर हिन्दी नामक में डॉ० जयन्ती प्रसाद नौटियाल लिखते हैं कि "हिन्दी विश्व के 73 देशों में स्थान बना चुकी है. भारत के सभी विश्वविद्यालयों में तो हिंदी पढ़ाई ही जाती है, इसके अलावा विश्व के एक सौ दस विश्वविद्यालयों/ संस्थान भी हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन होता है।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

विश्व में जहाँ भी भारतीय मूल के निवासी हैं वहाँ किसी न किसी रू अर्थात् राजभाषा, सहभाषा, संस्कार की भाषा अथवा शास्त्रीय (प्राचीन) भाषा की हैसियत से हिन्दी विद्यमान है।

भारत की अंतर्राष्ट्रीय हैसियत और हिंदी

:-

बात अगर आर्थिक दृष्टि से की जाए तो भारत व चीन 21 वीं सदी की दुनिया की सबसे तेज गति उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ इनके बाजार, उत्पादन और खपत में भी असीमित दर्ज की जा रही है। किसी देश की भाषा का विकास भी उस देश के बाजार और अर्थव्यवस्था के साथ नि गतिशील होता है। आज दुनिया का प्रत्येक देश भारत के साथ अपना व्यापार बढ़ाना चाहता है और अपने व्य को बढ़ाने के लिए पश्चिम के बहुत से देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी का अध्ययन-अध्यापन प्रारम्भ हो चुका इससे बदलते विश्व में हिंदी को एक नई पहचान मिल रही है । अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत की बढ़ती भागीदार हिंदी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय करैन्सी रूपये के साथ-साथ भारतीय भाषा हिन्दी भी दुनिया के देशों में पहुँच गई है। भारत देश के इस चतुर्दिक विकास को दृष्टिगत रखते हुए विश्व के बहुत से अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। जिससे वे भारत में अपना निवेश बढ़ा सके। संबंध आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं "कोई भाषा जितनी ही अधिक व्यापारों में मनुष्य का साथ देगी ज विकास और प्रचार की उतनी ही अधिक सम्भावना होगी । " निश्चय ही भारत की बढ़ती अन्तर्राष्ट्रीय हैसियत हिंदी लिए वरदान साबित हो रही है।

वैज्ञानिक और समर्थ भाषा हिंदी:

:-

हिंदी आज भारत में ही नहीं विश्व के विराट फलक पर अपने अस्तित्व को आकार दे रही है। आज वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी भाषा अपनी लिपि और ध्वन्यात्मक उच्चारण के लिहाज से सबसे शुद्ध और विज्ञान सम्मत भाषा है। "देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है, भारतीय भाषाएँ विश्व की अनेक भाषाओं की तुलना में वाक्य विज्ञान, ध्वनि - विज्ञान और रैखिक दृष्टि से अधिक से अधिक सुनियोजित हैं। अमेरिकी भाषा वैज्ञानिक श्री रिक ब्रिग्ज की यह धारणा है कि संस्कृत भाषा कम्प्यूटर प्रोग्राम की दृष्टि से आदर्श भाषा है। इसलिए देवनागरी लिपि में कम्प्यूटर कार्य करना कठिन नहीं है ।" हमारे यहाँ एक अक्षर से एक ही ध्वनि निकलती है और एक बिंदु अनुस्वार का भी अपना महत्त्व है। दूसरी भाषाओं में यह वैज्ञानिकता नहीं पाई जाती। वैश्विक स्तर पर वहीं भाषा टिक पाएगी

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

जिसका शब्द भंडार या शब्दकोश समुद्र के समान विशाल हो। उस भाषा में औदात्य भी होना चाहिए ताकि वह अपनी शब्द - संपदा में निरन्तर उन्नति के शिखर को छूए । भारत का यह दुर्भाग्य रहा है कि भारत में अनेक विदेशियों ने शासन किया जिनमें तुर्क, मंगोल, अफगान, मुगल, फ्रांसीसी, पुर्तगाली और विशेषकर अँग्रेज थे इन शासकों ने अपनी-अपनी भाषा में दरबार चलाया और देश पर शासन किया। इस लिहाज से हिंदी का यह सौभाग्य रहा है कि हिंदी भाषा शासकीय भाषाओं से प्रभावित हुई और उसका शब्द भंडार जो संस्कृत के के प्रभाव प्रभाव से से पहले पहले ही ही अत्यधिक समृद्ध था, वह और भी शब्द- सम्पन्न होता गया ।

'वाशिंगटन पोस्ट' के अनुसार हिंदी 2050 तक अधिकांश व्यावसायिक दुनिया पर हावी रहेगी, इसके बाद स्पेनिश, पुर्तगाली, अरबी और रूसी । यदि आप अपने कैरियर में भाषा द्वारा अधिक सफल होना चाहते हैं तो ऊपर सूचीबद्ध भाषाओं में से एक का अध्ययन करना सुनिश्चित करें।

हिंदी को वैश्विक क्षितिज के विराट फलक पर सुशोभित होने के लिए उसे विश्व व्यवस्था को संचालित करने वाली, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में प्रयुक्त होने वाली भाषा बनना होगा। हिंदी को अँग्रेजी भाषा का पल्लू छोड़ स्वावलम्बी रूप से विकसित होना होगा। आज जरूरत इस बात की है कि हम विधि, विज्ञान, वाणिज्य तथा नवीनतम प्रोद्योगिकी क्षेत्र में नए मुकाम हासिल करें। इसके लिए सबके प्रयास की जरूरत है। यह तभी सम्भव है जब लोग अपने कर्त्तव्यों को गहराई से महसूस करें और सुदृढ इच्छा शक्ति के साथ संकल्पित हो । हिंदी को अगर हमें वास्तविक अर्थों में अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनाना है तो पहले उसे सच्चे अर्थों में राष्ट्र भाषा बनाना होगा। हम सब हिंदी के नाम पर वर्ष में एक बार हिंदी दिवस या हिंदी सम्मेलन के अवसर पर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम करने की औपचारिकता करने का निर्वाह भर कर लेते हैं। हिंदी पखवारा या हिंदी सप्ताह मना लेते हैं। वास्तविक अर्थों में अगर हिंदी को पूरे विश्व से जोड़ना है तो सब तरह की रूढ़िवादिता और परम्पराओं को छोड़ना होगा। संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा निश्चित रूप से हिंदी को होना चाहिए । लेकिन समय की माँग यह है कि हम सब हिंदी की विकास यात्रा में शामिल हो ताकि तमाम निष्कर्षों एवम् प्रतिमानों पर कसे जाने के लिए हिंदी को विश्व भाषा की गरिमा प्रदान कर सकें।

संदर्भ सूचि

1. डॉ॰ करुणाशंकर उपाध्याय - हिन्दी का वैश्विक परिदृश्य लेख नेट पर उपलब्ध।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

2. **राष्ट्र भाषा हिंदी - जनवरी** 2000 **पृ.सं**.-7.

3. **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल - चिंत्तामणि भाग**-3.

4. **विजय कुमार मल्होत्रा**, **कम्प्यूटर के भाषिक अनुप्रयोग**

5. **वीना पाणी शर्मा - हिन्दी कैसे बने भारत के भाल की बिन्दी** ? **स्वदेशी रिसर्च जर्नल**, **अप्रैल - जून** 2013 **पृ०** 199.

6. **दैनिक जागरण-उत्थान को तरसती हिन्दी**, **अरविन्द कुमार**, 19 **सितम्बर** 2014.

7. **वीना पाणि- स्वदेशी रिसर्च जर्नल जुलाई-सितम्बर** 2013, **पृ०** 198.

8. **राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्याएँ और समाधान**, **डॉ० देवेन्द्रनाथ शर्मा**, **पृ०** 158.